Appendix II

Page 5
मुरिद - ए - दहर हुए बजा मगरिशी कर ती नये जनम की तपस्या में खुदकुटी कर ली कुलिकायत, मान 2, पृ ३० ३०

Page 6
क्षीण वजा पे कायम रहूँ आगर अकबर तो साफ कहते हैं, सबसे यह रंग है मैला जबतीं आगर इस्तिमाल करता हूँ खुद अपनी कोह महाती है शोर-ओ-बाबेला जो इतिहास की कहाँत तो वह इसरा-ना- उपर प्वादश हठ से दिये सबने पाव हैं फॉला इसरा ये दिये हैं के लमबे भी छोटे नहीं सकते उपर से भूत है के साही सुधारी-ए-मै ला इसरा है दफ़र-ए-तदनीर व मस्लेहत नापाक उपर है वही-ए- विस्तार की वाक का थे वाला गरज दोमंगा अजाब असत जाना-ए-मजनूर रा बला-ए-सहभागिता-ए-लेला व फुजुक-ए-लेला कुलिकायत, मान 1, पृ १९१/१९२

Pages 8 & 9
याह ! याह राह दिखाई है हमें मुरिद ने कर दिया काम के गुम और कलिसा से मिला रंग चेहरे का तो कलिसा ने भी नस्का कायम रंग-ए-बातिन में संगत बाप से बेटा न मिला सयद उठे जो गजन लो से तो लाखो लाये शेख कुरान दिखाते किरे पैशा न मिला। कुलिकायत, मान 2, पृ २१ २१
हमारी बातों ही बातें हैं सयद काम करता था न मूली फर्क जो है कहने वाले कहने वाले में कहे जो चाहे कोई में तो यह कहता हूँ ऐ अकबर! खुदा बदहार बहुत सी सुविधा भी भरने वाले में कुलिकायत, मान 1, पृ ३० ३०

Pages 9 & 10
न वह वक रह गये न सयद दिल-ए-एहबाब से निकलती है आह जात-ए-महमूद से तसल्ली भी, ली उन्होंने भी आज खुद की राह
हर गाम पे बन्द खाले निगाहर हर मोहर पे एक लाइसेंस्स तलब इस पार्क में आखिर ऐ अकबर ! मैं ने तो दहाण छोड़ दिया कुलिहावता। माण २, पृ. ५४

Page 14
राह मै लाइसेंस्स ही काफी है इज्ज़त के लिए वसं गढ़ ले लौटें तत्वावर रहने दीजिए कुलिहावता, माण २, पृ. ५५

पूछते यह हो के तू पीछा है या हरसं हों बनदा जो कुछ हो बहर हाना बिला लाईसेंस्स है कुलिहावता, माण ३, पृ. ५४

तहमद में बटन जब लगाने लगे जब थोरी से पतलून उगा हर पैड़ वे एक पेगरा बैठा वह खेल में एक कानून उगा कुलिहावता, माण ३, पृ. ५५

Page 15
ताजन-जो-तप-जो खटमल मचार सब कुछ हैं ये बैदा कीछढ़ से बने की रचनाएँ एक तरफ उसी सफाई एक तरफ कुलिहावता, माण २, पृ. ५१ किरत-ए-दिल को नफा पहुँचे अरक ऐसी चीज है दीदह-ए-गरियाँ में बाटर टेकरा की तजबीज है कुलिहावता, माण २, पृ. ५१

ये मौज़-ए- फूज़ है तोहजीब की या उसका तुफान है कुआ मौजत है घर में तो फिर पानी का नल कैसा कुलिहावता, माण २, पृ. ५१

Page 16
कारी का कुआं बना हो गया। लात घड़ी के कुंए एक दम कारी हो गये। छौँ खारी हो पानी पीते, गर्म पानी निकलता है। रास में सवार होकर कुआं को हाल दरायथात करने गया यहाँ...किससा मुखसार शहर सहर हो गया यह। अब जो कुंए जाते रहे और पानी गोहर-ए- नावाब हो गया तो वह सहर सहर-ए-कहता हो जाएगा।

वनाम गजकाह, १८५३, खलीक, माण २, पृ. ५२, पृ. २३

Page 17
पाइप कोई खुला नहीं घर में लगी है आग अब मागना जरूर हुआ गौर कर करे कुलिहावता, माण २, पृ. ५४ फर्माया कि थोड़ा अरसा हुआ बीक की दुकानों में आग लगी। उस बस्त पाइप बन्द होने से रिजाया का
सहर नुकसान हुआ था जिसके कोई अन्य संग्रह नहीं हो सकता था।

अगर उस बयान के साथ, तो आय वर बना काफी गर्मी होती है।

पा. 3, पृ. 131

Pages 18 & 19

पानी का वाहक किसी गुड़ से उबाल करना, एक दरिया है।

काफी, सुमानलाल इतना मीठा पानी कि पीने या बाला गुजरने के लिए पीकी राजस्थान है।

काफी, 1560, तलिका, पानी 3, पृ. 130

Page 20 & 21

पानी पीना पड़ा है पाईप का एक बहना पड़ा है टाइप का एक चलता है।

शाय एडवर्ड की दुसाई है।

काफी की बहसी जरा और स्वाधी और रक्षणदर्श हो और आखिर तक रंग न बदले।

काफी, तलिका, पानी 3, पृ. 130

Page 22

धर के खत में है के कल हो गया वेल्युम उक्ता

पोषणियर लिखता है बीमार का हाल आज़ा।

हवा-ए-लूबा है अब न सर में न मौज-ए-कौचे है अब नज़र में हवा हो रही है तो बस वही के हम भी छप जाए।

कुलियत, प. 3, पृ. 220
Pages 23 & 24

आजाद: आज प्रोफेसर लाल साहब जुम्ना—ए—पाक संस्कृत की अर्थशास्त्र पर लेखक देने वाले हैं। ये बुजुर्ग लाल वर्धमान और आलिया—ए—यमना यथा—ए—जमाना, महादेव—ए—दियां—ए—अमीर उन्होंने।

छाबेजीलाल: लाहौल बलाकुंतला भी खुदा की कसम किया है वीरों तुम्हें हारना चाहिए, प्रोफेसर साहब के मार्गदर्श प्राप्त करें, यह इतने बड़े हुए आज तक नाम भी सुना हो। क्या दुनिया से ख्याति मिलेगी?

कथा—ए—आजाद, मान 1, पृ ५२ ५२

बहादुर: खुदा कामयाब करे, लेकिन सुनिए। ये तो अस्तर है, इसमें खुदू—ए—ओहदा और तनहाह, और चौखुटा का कौशल जागरा। इसमें गुहारों का हाफ, या जंग—ओ—व्यवास, इलाही और पौराणिक कील—ओ— काल चाहिए या जंगाल?

आजाद: तो क्यों आपने अस्तार पदा ही नहीं, पीर—ओ—मुर्शिद, अखबार तो इतने—ए—नजरुलमा है, लड़कों का अत्याचार जवाबों का नाराज—ए—शाहीक उबूदों के तजमलों की कसौटी, सफन—ए—ख्रिस्त—ए—सल्तनत, पुरुषार का दूसरा, जनाबों का यार—ए—महर रिश्ता का वकील,जमवाह—ए—जनाम का सफीर, मुखियों का मुखीर, किसी कालम में मुक्ति के छूट—छाय नहीं सिंचाल जवर्मे में तकलीफ, कही अस्तार—ए—आबाद, कही नीचे और इस्तिहार अर्थों अंगों के विदेशों में तरह—तरह की बातें दिल्ली होती हैं, और देशी अस्तार भी इकट्ठा तत्त्वों करते हैं।

कथा—ए—आजाद, मान 1, पृ ५२ ५२

Page 25

मलागाभी जे भरोसा है जिन्हें ऐ अकबर
उनका स्वाम गुम है गुनाहों की गर्वारी का

कुलिश्वाल, मान 3, पृ ५२ ५२

तनहाह—ओ—तालम का ये दौर है अब हुरमन
उड़ों ने जो तांत, सहारा ने जो जोरान
जंगल के जो ये साई दो रेलें के हैं पाई
इमनी की जगह सिमान्त कुमars की जगह इजन

कुलिश्वाल, मान 2, पृ ५२ ५३

अभी इजन गया है इस तरफ से
कहे देनी है भोजी नकसो पा की

नीर दूलिया तलवा में

अभी इजन गया है इस तरफ से
कहे देनी है तारीखी हवा की

कुलिश्वाल, मान 1, पृ ५३ ५३

Page 26

सुनते नहीं हैं शोख नहीं रोशनी की बात
इजन की इनके कान में अब भाषा दीलिए

कुलिश्वाल, मान 1, पृ ५२ ५२

आई इजन के दीन हैं कहा चीज
में जो आई बीन है कहा चीज

कुलिश्वाल, मान 1, पृ ५२ ५३

इसका फसलन ना है और इसके हैं भापारे
योराप ने एशिया को इजन पे रख लिया है

कुलिश्वाल, मान 2, पृ ५२ ५२

Page 27

छाया ने किया नेंको का खूबसूरत
कबुली जहां गये इजन की में से

कुलिश्वाल, मान 2, पृ ५२ ५२

कहते हैं रहां—ए—तालकी में हमारे नौजवान
कूत्ता की जाहज नहीं हमको जाहज तक रेल है

कुलिश्वाल, मान 2, पृ ५२ ५२

Page 27, n

में इकबाल साहब की कल सब से नहीं करता
के दरबार—ए—लन्दन में बोह मकबूल है।
तालिब हूँ में यह ताप्त है दिल को निगाह का
सीधा नहीं है मुखों दिल में दिल का

कुलिश्वाल, पृ ५२ ५२—५३
Page 28
जमाने का रंग आप देख रहे हैं, ब्रूटी इज़्ज़त और नुकसान रसों लज़्ज़तों का शौक नालिब है, नाम है मुझे दस्तक का लेखन कौशल उन बातों की हो रही है जिन से सोसाइटी दुखड़े—दुखड़े हो जाए।
कृष्णात, पृ १७५
ये नज़म में इन्क्लाब रोकने के लिए नहीं हैं। यादगार—ए—इन्क्लाब हैं, हिस्सह—ए—योग में ये अशांश पाईएगा।
नज़म—ए—अकबर को समझ लो यादगार—ए—इन्क्लाब ये उसे मालूम है टलती नहीं आई हुई।
कृष्णात, पृ १५२–२०

Page 30
कहा मन्सूर ने खुदा हूं में
जारिन बोला बूझन: हूं में
हैं से कहने लगे मेरे एक दोस्त
फिर—ए—हर कसा बकबद—ए—हिम्मत—ए—क़स्त
कुलिश्याल, माण २, पृ १५०/४७४
मू—ओ—दुबा—ओ—मा—ओ—कामत—ए—यार
फिर—ए—हर कसा बकबद—ए—हिम्मत—ए—क़स्त
हाफिज, दीवान, पृ २३

Page 31
अगर जारिन की ये थ्योरी दुर्ख़स्त है के इन्सान बन्दर से पैदा हुआ तो इस मजिल—ए—तमुघुन पर एहल—ए—यौँफ़ू को इन्सानियत के बहुत से आला मुहाफ़िज़ का हाफिल होना बाँझिए था, नगर ऐसा नहीं, इस पर अफसोस करता हूं।
या इलाही ये कसे बन्दर हैं
इरादः पर भी आदरी न हुए
अज़हार अकबर, १६५

Page 32
जो गुज़रने उपर से मेरा उज़ज़ा गाँव देखने
शिकस्ता एक मरज़द है बगल में गोरा बारक है।
कुलिश्याल, माण २, पृ २०, ५०